ISSN(Online) : 2319-8753
ISSN (Print) : 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An UGC Approved, High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

UGC Approval No: 48027

Vol. 6, Issue 12, December 2017

छाया वसंत–वन की मधुर पिकी: महादेवी वर्मा

Dr. Rita Pandey

Associate Professor, Dept. Of Hindi, V.S.S.D. College, Kanpur, Uttar Pradesh, India

सारांश

किसी भी भाषा के उन्नति के लिए यह ज़रूरी है कि वह अधिक से अधिक लोगों द्वारा बोली जाए और उसमें रोजगार की संभावनाएं अधिक से अधिक हों। हिंदी में प्रचुर मात्रा में साहित्य सृजन किया गया है। अनेक विधाओं में साहित्यकारों ने अपनी रचनात्मकता से हिंदी समाज को समृद्ध किया। इसीलिए हिंदी के प्रचार और प्रसार के लिए अमर उजाला ने 'हिंदी हैं हम' अभियान शुरू किया है। इस कड़ी में साहित्यकारों के लेखकीय अवदानों को अमर उजाला और अमर उजाला काव्य # हिंदी हैं हम श्रृंखला के तहत पाठकों तक पहुंचाने का प्रयास कर रहा है। प्रस्तुत है छायावादी युग की महत्वपूर्ण हस्ताक्षर महादेवी वर्मा की काव्ययात्रा पर लेख-

महादेवी वर्मा हिंदी साहित्य के आसमान का छायावादी युगीन सितारा हैं जिनसे न जाने कितने ही नवलेखकों को रौशनी मिली। प्रेम की वेदना के जो स्वर मीराबाई के भीतर दिखाई पड़ते हैं वही महादेवी के काव्य में भी हैं इसलिए उन्हें आधुनिक युग की मीरा कहा जाता है। वह लिखती हैं कि

मैं नीर भरी दुख की बदली
विस्तृत नभ का कोई कोना
मेरा कभी न अपना होना
परिचय इतना इतिहास यही
उमड़ी कल थी मिट आज चली।

महादेवी वर्मा कवयित्री होने के साथ-साथ गद्यकार भी थीं। उनका जन्म 26 मार्च 1907 को फ़र्रुखाबाद में हुआ था। कई पीढ़ियों बाद उनके परिवार में पुत्री का जन्म हुआ था, अगर पैदा होती तो उसे मार दिया जाता था। महादेवी की माता भी कविता लिखती थीं व नाना भी ब्रजभाषा में लिखते थे, इस कारण बचपन में ही उन्होंने लेखन के गुणों को अपना लिया था। वह सात वर्ष में ही कविता लिखने लगीं। बचपन में मां को भगवान की पूजा करते देखा तो लिखा

ठंडे पानी से नहलाती
ठंडा चन्दन उन्हें लगाती
उनका भोग हमें दे जाती
तब भी कभी न बोले हैं
मां के ठाकुर जी भोले हैं।

विद्यार्थी जीवन में ही उनकी कविताएं पत्रिकाओं में छपने लगीं। महादेवी वर्मा की प्रारम्भिक शिक्षा से इंदौर से हुई, बी.ए. जबलपुर से किया और इलाहाबाद विश्वविद्यालय से संस्कृत में एम.ए. किया। तब तक नीहार और रश्मि काव्य संग्रह छप चुके थे।

परिचय

महान कवयित्री महादेवी वर्मा छायावाद के प्रमुख कवियों में से एक थीं। आधुनिक हिंदी साहित्य में उनका महान योगदान रहा है।

ISSN(Online) : 2319-8753
ISSN (Print) : 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An UGC Approved, High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

UGC Approval No: 48027

Vol. 6, Issue 12, December 2017

उन्होंने कई कहानियां, उपन्यास, निबंध और संस्मरण लिखे, परंतु उन्हें अत्यधिक ख्याति कविताओं से ही प्राप्त हुई, वे हिंदी साहित्य में छायावाद युग के चार प्रमुख का कवि सुमित्रानंदन पंत, जयशंकर प्रसाद, और सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' कवियों में से एक मानी जाती हैं। महादेवी वर्मा ने स्वतंत्रता से पहले और बाद का वर्णन अपनी कविताओं में किया है। कवयित्री और गद्य लेखिका महादेवी वर्मा साहित्य और संगीत में निपुण होने के साथ-साथ, वे एक कुशल चित्रकार और सृजनात्मक अनुवादक की थी। [1,2]

आधुनिक गीत काव्य में महादेवी वर्मा का स्थान सर्वोपरि है। यह एक महान कवयित्री होने के साथ-साथ हिंदी साहित्य जगत में एक बेहतरीन गद्य लेखिका के रूप में भी जानी जाती है। महाकवि सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' जी ने उन्हें माता सरस्वती कहकर भी संबोधित किया है, अर्थात उन्हें सरस्वती की उपाधि प्रदान की है। बचपन से ही लेखिका को साहित्य जगत से प्रेम था। उन्हें इसकी प्रेरणा अपने माता-पिता से ही मिली। इनके पिता श्री गोविंद सहाय वर्मा जी ने भी अपनी शुरुआत साहित्य जगत से ही की थी। महादेवी की माता श्रीमती हेमरानी देवी एक विदुषी महिला थी, उन्हें संस्कृत और हिंदी का अच्छा ज्ञान होने के साथ-साथ, वे एक समाज सुधारक और एक धार्मिक प्रवृत्ति की महिला थीं। उन्होंने ही महादेवी को तुलसीदास, सूरदास और मीरा का साहित्य पढ़ाया। परिवारिक माहौल के कारण महादेवी जी को बचपन से ही साहित्य में अभिरुचि थी। फलतः मात्र 7 वर्ष की अल्पायु में ही उन्होंने मौलिक काव्य की रचना कर दी थी। अतः छायावादी काव्य के पल्लवन एवं विकास में इनका अविस्मरणीय योगदान रहा है।

महादेवी वर्मा का जन्म 24 मार्च, सन् 1907 में उत्तर प्रदेश के फर्रुखाबाद नगर के एक प्रतिष्ठित परिवार में हुआ था। उनकी आरंभिक शिक्षा मिशन स्कूल, इंदौर में हुई। महादेवी वर्मा जी का प्रारंभिक अत्यंत कष्टकारी और दुःख में व्यतीत हुआ। उनकी यह पीड़ा एवं कष्ट को उन्हने बेहद भावनात्मक रूप से अपनी कविताओं में वर्णित किया है। मात्र नौ वर्ष की अल्पायु में ही उन्हें विवाह के बंधन में बांध दिया गया, किंतु यह बंधन स्थाई न रह सका। उन्होंने अपना सारा समय अध्ययन में लगाना प्रारंभ कर दिया और सन् 1982 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय से संस्कृत में एम० ए० की परीक्षा उत्तीर्ण की। उनकी योग्यताओं से प्रभावित होकर उन्हें प्रयाग महिला विद्यापीठ की प्रधानाचार्या के रूप में नियुक्त किया गया। उन्हें छायावादी हिंदी काव्य के चार स्तंभों में से एक माना जाता है। उन्हें विभिन्न साहित्यिक पुरस्कारों से भी सम्मानित किया गया।

सन् 1956 में भारत सरकार ने उन्हें पद्मभूषण अलंकरण से सम्मानित किया। उन्हें 1983 में 'यामा' संग्रह के लिए ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला और उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान का भारत भारती पुरस्कार मिला। उन्हें विक्रम विश्वविद्यालय, कुमायूँ विश्वविद्यालय तथा दिल्ली

ISSN(Online) : 2319-8753
ISSN (Print) : 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An UGC Approved, High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

UGC Approval No: 48027

Vol. 6, Issue 12, December 2017

विश्वविद्यालय द्वारा डी० लिट् की मानद उपाधि से विभूषित किया गया। महादेवी वर्मा जी एक मशूहर कवियित्री और एक सुविख्यात लेखिका तो थी हीं, इसके साथ ही वे एक महान समाज सुधारक भी थीं। इन्होने महिलाओं के सशक्तिकरण पर विशेष जोर दिया और महिला शिक्षा को काफी बढ़ावा दिया था। महादेवी वर्मा जी ने महिलाओं को समाज में उनका अधिकार दिलवाने और उचित आदर सम्मान दिलवाने के लिए कई महत्वपूर्ण और क्रांतिकारी कदम उठाए थे।

विचार – विमर्श

महादेवी वर्मा की प्रारंभिक शिक्षा 5 वर्ष की अवस्था में उनके गांव से सन् 1912 में मिशन स्कूल इंदौर से प्रारंभ हुई। इसके साथ उन्होंने संस्कृत एवं अंग्रेजी भाषा का अध्ययन भी अपने घर पर रहते हुए ही किया। इसके अलावा उन्हेंने चित्रकला और संगीतकला में भी निपुणता हासिल कर ली थी। उनके विवाह के कारण उनकी शिक्षा कुछ समय के लिए स्थगित कर दी गई थी। परंतु उन्होंने अपनी मेहनत और लगन से 1919 ई. में प्रयागराज विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया। यही से उनकी लेखनी में सुधार आने लगा, 1921 ई. में महादेवी वर्मा जी ने आठवीं कक्षा प्रथम स्थान पर रहते हुए उत्तीर्ण की। और 1924 में भी इन्होंने प्रथम स्थान पर रहते हुए मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की।

मैट्रिक के बाद वह एक सफल कवयित्री के रूप में प्रसिद्ध हो गई थी। उन्होंने अपनी एम.ए की परीक्षा 1932 में उत्तीर्ण की। तब तक इन की दो कविताएं प्रकाशित हो चुकी थीं। अब वह एक प्रसिद्ध कवित्री के रूप में उभर चुकी थी, और उनकी कविताएं प्रकाशित होने लगी थी। विद्यालय में रहते हुए हिंदी के अध्यापक से प्रभावित होकर उन्होंने ब्रज भाषा में भी कुछ कविताएं लिखी, फिर खड़ीबोली की कविताओं से प्रभावित होकर रोला और हरिगीतिका शब्दों में काव्या लिखना प्रारंभ किया। उन्होंने अपने विद्यार्थी जीवन में प्राय: राष्ट्र और समाज को प्रभावित करने वाली कविताओं का उत्थान किया।[3,4]

परिणाम

महादेवी वर्मा का कार्यक्षेत्र लेखन, संपादन और अध्ययन रहा है। उन्होंने 7 वर्ष की अल्पायु में ही लिखना आरंभ कर दिया था। उन्हें लेखनकार्य की प्रेरणा अपने माता-पिता से ही प्राप्त हुई। परिवारिक माहौल के कारण महादेवी बचपन से ही लेखन कार्य में अभिरुचि लेने लगी थीं। 1932 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय से संस्कृत में एम.ए करने के पश्चात उन्होंने महिला विश्वविद्यालय के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया, और वहीं पर प्रधानाचार्य के पद पर नियुक्त हुई। उसी समय इन्होंने मासिक पत्रिका "चांद" का कार्यभार संभाला। 1930 'निहार', 1934 'निरजा', तथा 1936 में 'संध्यागीत' नमक चार कविता संग्रह प्रकाशित हुए।

कवित्री और गद्य लेखिका महादेवी वर्मा साहित्य और संगीत में निपुण होने के साथ-साथ एक कुशल चित्रकार और सृजनात्मक अनुवादक भी थी। इन्हें हिंदी साहित्य के सभी उसका प्राप्त करने का गौरव प्राप्त है।इन्होंने कई कहानियां लिखीं लेकिन उन्होंने कुछ संस्मरण रेखाचित्र और निबंध भी लिखे हैं जो अपने समय के अत्याधिक प्रभावित लेख में से एक हैं, महादेवी जी ने महिला समाज सुधारक के रूप में भी कार्य किया।इन्होंने इलाहाबाद में साहित्यकार संसद की स्थापना 1955 में की थी, और भारत में पहला महिला कवि सम्मेलन की नींव भी उन्होंने 15 अप्रैल 1933 को 'सुभद्रा कुमारी चौहान' की अध्यक्षता में 'प्रयाग महिला विश्वविद्यालय' में रखी। महादेवी जी ने नए आयाम गद्य, काव्य, शिक्षा और चित्रकला सभी क्षेत्रों में स्थापित किए, इसके अलावा उनकी 18 काव्य और गद्य कृतियां हैं, जिनमें प्रमुख हैं- 'मेरा परिवार', 'स्मृति की रेखाएं', 'पथ के साथी' और 'अतीत के चलचित्र' आदि। अतः इन्हें हिंदी साहित्य के सभी पुरस्कार और सम्मान प्राप्त करने का गौरव प्राप्त है।

निष्कर्ष

महादेवी वर्मा कवयित्री के रूप में प्रसिद्ध हैं, लेकिन गद्य के विकास में भी उनका महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। उन्होंने कहानी, संस्मरण, रेखाचित्र, निबंध आदि गद्य विधाओं पर सफलतापूर्वक लेखनी चलाई। उनके अधिकांश संस्मरण एवं रेखाचित्र कहानी कला के समीप दिखाई पड़ते हैं। उनके संस्मरणों के पात्र अत्यंत सजीव एवं यथार्थ के धरातल पर विचरण करते हुए देखे जा सकते हैं।

IJIRSET

ISSN(Online) : 2319-8753
ISSN (Print) : 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An UGC Approved, High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

UGC Approval No: 48027

Vol. 6, Issue 12, December 2017

उनकी गद्य रचनाओं में अनुभूति की प्रबलता के कारण पद्य जैसा आनंद आता है। उनके संस्मरणों के मानवेत्तर पात्र भी बड़े सहज एवं सजीव बन पड़े हैं। उनके गद्य साहित्य की मूल संवेदना करुणा और प्रेम है। इसीलिए उनका गद्य साहित्य काव्य भिन्न है। काव्य में वे प्रायः अपने ही सुख-दुख, विरह-वियोग आदि की बातें करती रही हैं, किंतु उन्होंने गद्य साहित्य में समाज के सुख-दुख का अत्यंत मनोयोग से चित्रण किया है। उनके द्वारा लिखे गए रेखाचित्रों में समाज के लि वर्ग या निम्न वर्ग के लोगों के बड़े मार्मिक चित्र मिलते हैं। इनमें उन्होंने उच्च समाज द्वारा उपेक्षित, निम्न कहे जाने वाले उन लोगों का चित्रण किया है, जिनमें उच्च वर्ग के लोगों की अपेक्षा अधिक मानवीय गुण और शक्ति है।[5,6]

अतः स्पष्ट है कि उनका गद्य साहि समाजपरक है। उनके गद्य साहित्य में तत्कालीन सामाजिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक समस्याओं और परिस्थितियों का भी यथार्थ चित्रण हुआ है। नारी समस्याओं को भी उन्होंने अपनी कई रचनाओं के माध्यम से उठाया है। वे काव्य की भाँति गद्य की भी महान साधिका रही हैं। उनके गद्य साहित्य में उनका कवयित्री-रूप भी लक्षित होता है।

महादेवी जी के गद्य की भाषा-शैली अत्यंत सहज एवं प्रवाहपूर्ण है। उनकी गद्य भाषा में तत्सम शब्दों की प्रचुरता है। महादेवी की गद्य-शैली वैसे तो उनकी काव्य-शैली के ही समान संस्कृतगर्भित, भाव-प्रवण, मधुर और सरस है, परंतु उसमें अस्पष्टता और दुरूहता नहीं है। इसे व्यावहारिक शैली माना जा सकता है। कहीं-कहीं विदेशी शब्दों का भी प्रयोग हुआ है, परंतु बहुत ही कम। उनकी रचनाओं की भाषा-शैली की सबसे बड़ी विशेषता उसकी मर्मस्पर्शिता है। वे भावुक होकर पात्रों की दीन-हीन दशा, उनके मानसिक भावों तथा वातावरण का बड़ा मार्मिक चित्रण करती हैं। उनका काव्य व्यंग्य और हास्य से शून्य है, परंतु वे अपनी गद्य-रचनाओं में समाज, धर्म, व्यक्ति और विशेष रूप से पुरुष जाति पर बड़े गहरे व्यंग्य कसती हैं। बीच-बीच में हास्य के छींटे भी उड़ाती चलती हैं। [7,8]

इन विशेषताओं ने उनके गद्य को बहुत आकर्षक, मधुर और प्रभावशाली बना दिया है। वे प्रायः व्यंजना-शक्ति से काम लेती हैं। वे अपनी इस आकर्षक गद्य-शैली द्वारा हमारे हृदय पर गहरा प्रभाव डालती हैं। संक्षेप में, उनकी गद्य-शैली में कल्पना, भावुकता, सजीवता और भाषा चमत्कार आदि के एक-साथ दर्शन होते हैं। उसमें सुकुमारता, तरलता और साथ ही हृदय को उद्वेलित कर देने की अद्भुत शक्ति भी है।[9,10]

संदर्भ

1. वर्मा 1985, पृष्ठ 38-40
2. ↑ "Mahadevi Verma: Modern Meera" (अंग्रेज़ी में). लिटररी इंडिया. मूल (एचटीएमएल) से 21 मार्च 2007 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 3 मार्च 2007. |access-date= में तिथि प्राचल का मान जाँचें (मदद)
3. ↑ "महादेवी का सर्जन : प्रतिरोध और करुणा". तद्भव. मूल (एचटीएमएल) से 22 सितंबर 2007 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 28 अप्रैल 2007. |access-date= में तिथि प्राचल का मान जाँचें (मदद)
4. ↑ "गद्यकार महादेवी वर्मा". ताप्तीलोक. मूल (एचटीएमएल) से 17 मई 2006 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 26 मार्च 2007. |access-date= में तिथि प्राचल का मान जाँचें (मदद)
5. ↑ वशिष्ठ, आर.के. (2002). उत्तर प्रदेश (मासिक पत्रिका) अंक-7. लखनऊ, भारत: सूचना एवं जनसंपर्क विभाग, उ.प्र. पृ° 24. पाठ "editor: विजय राय" की उपेक्षा की गयी (मदद); |access-date= दिए जाने पर |url= भी दिया जाना चाहिए (मदद)
6. ↑ Verma, Srishti . "सुभद्रा कुमारी चौहान थी महादेवी वर्मा की रूममेट, गूगल ने किया आज का दिन उन्हें समर्पित". Dainik Jagran. मूल से 28 अप्रैल 2008 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 2009 |accessdate=, |date= में तिथि प्राचल का मान जाँचें (मदद)
7. ↑ सिंह 2007, पृष्ठ 38-40
8. ↑ पांडेय 1968, पृष्ठ 10

ISSN(Online) : 2319-8753
ISSN (Print) : 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An UGC Approved, High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

UGC Approval No: 48027

Vol. 6, Issue 12, December 2017

9. ↑ "जो रेखाएँ कह न सकेंगी". अभिव्यक्ति. मूल (एचटीएम) से 29 सितंबर 2006 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 30 मार्च 2007. |access-date= में तिथि प्राचल का मान जाँचें (मदद)
10. ↑ "महाकवि का बजट". नवभारत टाइम्स. 7 फरवरी, 2007. नामालूम प्राचल |accessmonthday= की उपेक्षा की गयी (मदद); नामालूम प्राचल |accessyear= की उपेक्षा की गयी (|access-date= सुझावित है) (मदद); |date= में तिथि प्राचल का मान जाँचें (मदद)